पंडित मदन मोहन मालवीय जयंती

चर्चा में क्यों?

25 दिसंबर 2023 को पंडित मदन मोहन मालवीय की 162वीं जयंती पर प्रधानमंत्री विज्ञान भवन में आयोजित एक कार्यक्रम में '**पंडित मदन मोहन मालवीय की संकलित रचनाओं**' के 11 खंडों की प्रथम श्रृंखला का विमोचन करेंगे।

मुख्य बिंदु:

- द्विभाषी (अंग्रेज़ी और हिंदी) कार्य में **मदन मोहन मालवीय** के लेख, भाषण, अप्रकाशित पत्र और अन्य कार्य शामिल हैं।
- मदन मोहन मालवीय (25 दिसंबर 1861 - 2 नवंबर 1946) एक **भारतीय विद्वान, राजनीतिज्ञ और शिक्षा** सुधारक थे।
- वह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल एक प्रमुख नेता थे, जिन्होंने चार बार भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वह **अखिल भारत हिंदू महासभा और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय** के संस्थापक भी थे।

मदन मोहन मालवीय

(25 दिसंबर, 1861 - 2 नवंबर, 1946)

“शिक्षाविद, पत्रकार, राजनीतिज्ञ और स्वतंत्रता आंदोलन के कार्यकर्त्ता”
महात्मा गांधी द्वारा 'महामना' और डॉ. एस. राधाकृष्णन द्वारा 'कर्मयोगी' की उपाधि

स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका:

- वह नरमपंथी एवं गरमपंथी दोनों के बीच की विचारधारा के नेता थे
- नमक सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) में भाग लिया
- चार सत्रों (1909, 1913, 1919 और 1932) के लिये भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के अध्यक्ष चुने गए

प्रमुख योगदान:

- 'गिरमिटिया मज़दूरी' प्रथा को समाप्त करने में
- वर्ष 1905 में गंगा महासभा की स्थापना
- 11 वर्ष (1909-1920) तक 'इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल' के सदस्य
- पद 'सत्यमेव जयते' शब्द को लोकप्रिय बनाया
- ब्रिटिश-भारतीय न्यायालयों में देवनागरी का प्रवेश
- वर्ष 1915 में हिंदू महासभा की स्थापना में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका
- वर्ष 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) की स्थापना

पत्रकारिता:

- अभ्युदय (हिंदी साप्ताहिक) और मर्यादा (हिंदी मासिक)
- हिंदुस्तान टाइम्स के निदेशक मंडल के अध्यक्ष

सम्मान:

- भारत रत्न (2014)
- वाराणसी-नई दिल्ली महामना एक्सप्रेस (2016)

दृष्टि The Vision
Drishti IAS

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/pandit-madan-mohan-malaviya-jayanti